केन्द्रीय उपोष्ण बागवानी संस्थान
रहमानखेड़ा, पो. काकोरी, लखनऊ-227 107 उ.प्र.(भारत)
Central Institute for Subtropical Horticulture
Rehmankhera, PO Kakori, Lucknow-227 107 U.P. (India).

प्रेस विज्ञप्ति

आम में पाउडरी मिल्ड्यू (खर्रा/दहिया) रोग प्रबंधन

पाउडरी मिल्ड्यू के (अ) पत्तों, (ब) पुश्प समूह तथा (स) फलों पर लक्षण

पाउडरी मिल्ड्यू (खर्रा/दहिया) *ओडियम मैंजीफेरी* नामक फफूँद से होने वाला एक महत्वपूर्ण एवं गंभीर रोग है। इस रोग के अत्यधिक संक्रमण से फल उत्पादन में 50 प्रतिशत से ज्यादा कमी आ सकती है। इस रोग की भुरूआत फरवरी के प्रथम सप्ताह से मार्च के तृतीय सप्ताह तक होती है। इस रोग के लक्षण बौरों, पुश्पक्रमों की डंठल, नयी पत्तियों तथा फलों पर देखे जा सकते हैं। इस रोग का वि ोश लक्षण सफेद कवक या चूर्ण के रूप में प्रकट होना है जिनके ऊपर अनगिनत कोनिडिया (बीजाणु) लड़ी में कोनिडियोफोर पर लगे होते हैं। यह रोग वायु वाहित कोनिडिया के द्वारा फैलता है। फफूँद का आक्रमण नयी पत्तियों पर तब होता है जब उनका रंग बैंगनी

भूरा से हल्का हरा होने लगता है एवं पत्तियों के दोनों तरफ छोटे स्लेटी धब्बे के रूप में रोग दिखता है। रोग के लक्षण स्पष्ट रूप से पत्तियों की निचली सतह पर दिखते हैं। रोग की सबसे गम्भीर अवधि पुश्पन के समय होती है जब फफूँद के आक्रमण से फूल गिरतें हैं। इसके प्रभाव से फूल खिल नहीं पाते तथा गिरने लगते हैं जिससे फसल को भारी क्षति होती है। इस रोग के फैलने के लिए अधिकतम तापमान 35^0 सें. ग्रे., न्यूनतम तापमान 15–17^0 सें.ग्रे., सापेक्ष नमी 50–60 प्रति ात तथा हवा की रफतार 2–5 कि.मी. होनी चाहिए। यह स्थिति सामान्यतया उत्तर भारत में मार्च के मध्य में होती है।

पाउडरी मिल्ड्यू रोग का प्रबंधन कैसे करें ?

रोगग्रसित पत्तियों और गुम्मा ग्रसित पुश्प गुच्छों की छँटाई से रोग को नियंत्रित किया जा सकता है जिसके बाद रासायनियक नियंत्रण ही अधिक लाभप्रद होता हैं। पाउडरी मिल्ड्यू के नियंत्रण के लिए घुलन ील सल्फर (0.2 %, 2 ग्रा. प्रति ली. पानी में) का प्रथम छिड़काव निरोधक के रूप में तब करें जब पुश्पगुच्छ 8–10 सें.मी. आकार का हो जाये। दूसरा छिड़काव डिनोकैप (0.1 %, 1 मि.ली. प्रति ली. पानी) का पहले छिड़काव के 10–15 दिनों के बाद करें। आव यकतानुसार तीसरा छिड़काव ट्राईडीमार्फ (0.1 %, 1 मि.ली. प्रति ली. पानी) का दूसरे छिड़काव के 10–15 दिनों के प चात किया जाना चाहिये। यदि पाउडरी मिल्ड्यू का प्रकोप कम हो तो तीनों छिड़काव में घुलन ील सल्फर का प्रयोग कर सकते हैं। पूर्ण पुश्पन की अवस्था में फफूँदनाशी का छिड़काव नहीं करना चाहिए। यद्यपि रोग प्रबंधन के लिए तीन छिड़काव संस्तुत हैं किन्तु रोग के फैलने के समय को पहचान कर एक या दो छिड़काव के द्वारा भी रोग प्रबंधन किया जा सकता है।

<u>अधिक जानकारी हेतु संपर्क करें–</u>

निदेशक, केन्द्रीय उपोश्ण बागवानी संस्थान, रहमानखेड़ा, पो. काकोरी, लखनऊ–227107 या प्रत्येक शुक्रवार को पूर्वाह्न 10.30 बजे से अपराह्न 4 बजे तक

दूरभाश सं.–0522–2841082, 2841023 के द्वारा फोन इन लाइव कार्यक्रम के तहत विशय विशेशज्ञों से जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।